60

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

वर्ष-2017

24 पृष्ठीय

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे ↓

परीक्षा का विषय	विषय कोड	परीक्षा का माध्यम
विशिष्ट हिन्दी	0 0 1	हिन्दी

स्टीकर तीर के निशान ↓ से मिलाकर लगायें

[redacted]

उत्तर पुस्तिका का सरल क्रमांक: 0422740

अंकों में — परीक्षार्थी का रोल नम्बर

—	2	7	3	5	2	7	5	1	5

शब्दों में

—	दो	सात	तीन	पाँच	दो	सात	पाँच	एक	पाँच

[redacted]

क – पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या अंकों में X शब्दों में X

ख – परीक्षार्थी का कक्ष क्रमांक 18

ग – परीक्षा का दिनांक 01 03 2017

परीक्षा का नाम एवं परीक्षा केन्द्र क्रमांक की मुद्रा

हायर सेकंण्डरी प्रमाण-पत्र परीक्षा केन्द्राध्यक्ष केन्द्र क्रमांक 351004

पर्यवेक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर	केन्द्राध्यक्ष/सहायक केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर
Padma Singh	

केन्द्राध्यक्ष/सहायक केन्द्राध्यक्ष एवं पर्यवेक्षक द्वारा भरा जावे

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे ↓

प्रमाणित किया जाता है कि मूल्यांकन के समय पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या उपरोक्तानुसार सही पाई होलो क्राफ्ट स्टीकर क्षतिग्रस्त नहीं पाया गया तथा अन्दर के पृष्ठों के अनुरूप मुख्य पृष्ठ पर अंकों की प्रविष्टी एवं अंकों का योग सही है।

निर्धारित मुद्रा : नाम, पदनाम, मोबाईल नम्बर, परीक्षक क्रमांक एवं पदांकित संस्था के नाम की मुद्रा लगाएं।

उप मुख्य परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा	परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा
R. K.	शास. उ.मा. वि.

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे

केवल परीक्षक द्वारा भरा जावे।

प्रश्न क्रमांक के सम्मुख प्राप्तांकों की प्रविष्ठी करें।

प्रश्न क्रमांक	पृष्ठ क्रमांक	प्राप्तांक (अंकों में)
1		
2		
3		5 4½
4		
5		
6		
7		
8		
9		
10		
11		
12		
13		
14		
15		
16		
17		
18		
19		
20		
21		
22		
23		
24		
25		
26		
27		
28		
		98

कुल प्राप्तांक शब्दों में	कुल प्राप्तांक अंकों में

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 2 के अंक = कुल अंक

मध्यप्रदेश

BOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYA

प्रश्न क्र.

प्रश्नोत्तर क्र.-1

(अ) (iii) वर्षा।

(ब) (iv) दस + नौ।

(स) (iii) कानपुर।

(द) (i) चौबीस।

(इ) (i) वसन।

प्रश्नोत्तर क्र.-2

(अ) गानपन।

(ब) असहमत।

(स) साधु।

(द) सफल न होना।

(इ) जुगुप्सा।

B
S
E

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ के अंक = कुल अंक
मध्यप्रदेश
BOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्नोत्तर क्र.-3

(अ) साध्य और असाध्य रूप में।

(ब) घनानंद की प्रेमिका सुजान ने।

(स) 'देशसेवा' विषय।

(द) खरगौन और मंडला।

(इ) अन्योक्ति अलंकार।

BSE

प्रश्नोत्तर क्र.-4

(अ) भवानी प्रसाद मिश्र।

(ब) आज्ञावाचक।

(स) खण्डकाव्य।

(द) शिवप्रसाद सिंह।

(इ) रामदरश मिश्र।

BOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्नोत्तर क्र.-5

(अ) सत्य ।

(ब) सत्य ।

(स) असत्य ।

(द) असत्य ।

(इ) सत्य ।

B
S
E

प्रश्नोत्तर क्र.-6 (अथवा)

कबीर ने शब्द की महिमा बताई है कि मनुष्य को शब्दों का प्रयोग सोच-समझकर करना चाहिए। शब्द के अपितु हाथ और पैर नहीं होते हैं किंतु एक बुरा शब्द लोगों के मन में ईर्ष्या और घृणा का भाव उत्पन्न कर देता है और एक अच्छा शब्द लोगों के वर्षों की शत्रुता को भी नष्ट कर देता है।

EDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALB

क्र.

प्रश्नोत्तर क्र.-7

धरती मानव है तो बसंत मानवता है। दोनों में आपस का यही नाता है।

प्रश्नोत्तर क्र.-8

सुरलोक में देवगण भारत की संस्कृति तथा ऋषि-मुनियों का वंदन कर रहे है।

प्रश्नोत्तर क्र.-9 (अथवा)

मीरा को हरि से मिलने में निम्न कठिनाइयो का सामना करना पड़ता है —

(i) मीरा के चारों मार्ग (कर्म, धर्म, ज्ञान और वैराग्य) बंद हो चुके है।
(ii) मीरा के प्रभु तक जाने का मार्ग अत्याधिक सँकरा और रपटीला है।
(iii) मीरा का गाँव प्रभु से काफी दूर है।

BOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्नोत्तर क्र.-10 (अथवा)

विभावरी के बीत जाने पर ऊषा नागरी अम्बर रूपी पनघट में तारागण रूपी घट को डुबो रही है।

प्रश्नोत्तर क्र-11

रेवती के चरित्र की दो विशेषताएँ निम्नलिखित है :-

(i) पातिव्रता :- रेवती एक निम्न मध्यमवर्गीय परिवार की स्त्री है। वह अपने पिता का पूरा ध्यान रखती है तथा उसकी बातो को सुनती और समझती है।

(ii) अपने पराये में भेद :- नन्हेमल और बाबूलाल के आने पर खाना बनाने को रेवती राजी नही होती किंतु जब आगन्तुक के रूप मे उसका भाई आया तो वह तुरंत उसके सेवा-भाव मे लग गई, यद्यपि उसके सर मे दर्द था।

B
S
E

MADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION

प्रश्न क्र.

प्रश्नोत्तर क्र.-12

अध्यक्ष को गंभीर किस्म का प्राणी कहा गया है क्योंकि उसमें यह भ्रम बनाए रखने की क्षमता होती है कि वह गंभीर है।

प्रश्नोत्तर क्र.-13

जब पाण्डव अज्ञातवास में थे तब कौरवों ने उत्तरकुमार की गायों का हरण कर लिया था। अर्जुन ने उत्तरकुमार का सारथी बनकर भीष्म पितामह, आचार्य द्रोणाचार्य और कर्ण के दाँत खट्टे कर दिए थे।

प्रश्नोत्तर क्र.-14

देवकी की गोद में समुद्र की लहरें मचल रही थी जो किसी बालक की तरह प्रतीत हो रही थी। सम्भवतः वह बालक श्रीकृष्ण थे।

BSE

BOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्नोत्तर क्र.-15 (अथवा)

(अ) ~~अपने मिया~~
अपने मुँह मिया मिट्ठू बनना - अपनी प्रशंसा स्वयं करना

वाक्यप्रयोग :- सीता को कुछ आता नहीं है फिर भी वह अपने मुँह मिया मिट्ठू बनकर खुद पर घमंड करती है।

(ब) दाँत खट्टे करना - पराजित करना।

वाक्यप्रयोग :- भारतीय वीर सैनिकों ने पाकिस्तानी सैनिको के दाँत खट्टे कर दिए।

B
S
E

प्रश्नोत्तर क्र.-16

माधुर्य गुण की परिभाषा :- जिस काव्य को पढ़ने और सुनने मात्र से उसमें कोमलता, मधुरता तथा वात्सल्य रस का आभास हो, उसे माधुर्य गुण कहते है। इसमें कोमल वर्णों की प्रधानता होती है तथा यह श्रृंगार, करूण और वात्सल्य रस में प्रमुख रूप से पाया जाता है।

मध्यप्रदेश
SECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्नोत्तर क्र. - 17

उत्तराखंड के चारों धाम गंगोत्री, यमुनोत्री, केदारनाथ तथा बद्रीनाथ क्रमशः गंगा नदी के किनारे, यमुना नदी के किनारे, मंदाकिनी के किनारे तथा अलकनंदा के किनारे स्थित है।

प्रश्नोत्तर क्र. - 18 (अथवा)

विभावना अलंकार की परिभाषा :—

जिस अलंकार में कारण के न होते हुए भी कार्य का होना पाया जाता है, उसे 'विभावना' अलंकार कहते है।

उदाहरण :—

" बिनु पद चलै सुनै बिनु काना। कर बिनु
कर्म करै विधि नाना,
आनन रहित सकल रस भोगी, बिनु वाणी
वक्ता बड़ जोगी।"

BSE

BOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION

प्रश्न क्र.

प्रश्नोत्तर क्र. - 19

भाषा और बोली में तीन अंतर निम्नलिखित हैं :—

क्र.	भाषा	बोली
1.	भाषा विकास प्रक्रिया का उच्चतम रूप है।	बोली किसी भी भाषा के विकास की प्रारंभिक क्रिया है।
2.	भाषा का क्षेत्र विस्तृत और व्यापक होता है।	बोली का क्षेत्र सीमित होता है।
3.	भाषा लिखित और मौखिक दोनों रूपों में पाई जाती है।	बोली केवल मौखिक रूप में ही परिलक्षित होती है।

BSE

BOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्नोत्तर क्र. - २०

छायावाद की चार विशेषताएँ निम्नलिखित हैं :-

(1) व्यक्तिवाद की प्रधानता :-
छायावादी कवियों ने अपने सुख-दुख और हर्ष-शोक की भावना को ही वाणी प्रदान करते हुए रचनाएँ की है।

(२) श्रृंगार-भावना :-
छायावाद का श्रृंगार अतीन्द्रिय सूक्ष्म श्रृंगार है। यह कौतूहल और विस्मय का विषय है।

(3) नारी के प्रति नवीन भावना :-
छायावाद में नारी को सम्मानजनक स्थान प्रदान किया है। छायावाद की नारी उपभोग की वस्तु नही है अपितु इस स्थूल जगत की प्रतिष्ठा सुकुमार देवी है।

(4) अज्ञात सत्ता के प्रति प्रेम :-
अज्ञात सत्ता के प्रति कवि में हृदयगत प्रेम की अभिव्यक्ति पाई जाती है। कवि कभी इसे प्रेयसी के रूप में देखता है तो कभी प्रकृति के रूप में इसका वर्णन करता है।

B
S
E

BOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPAL
प्रश्न क्र.

प्रश्नोत्तर क्र.-22

'तुलसीदास'

(अ) दो रचनाएँ:- 'दोहावली', 'कवितावली'

(ब) भाव-पक्ष:-
तुलसीदास जी रामभक्ति शाखा के प्रमुख कवि है। उनका उद्देश्य अपनी रचनाओं के माध्यम से रामराज्य की स्थापना करना है। उनके काव्य मे लोकहित तथा लोकमंगल की भावना निहित है। विचारों की द्रष्टि से उनके काव्य में आध्यात्मिकता परिलक्षित होती है।

B
S
E

कला-पक्ष:-
तुलसीदास जी की प्रमुख भाषा ब्रज और अवधी है। उनकी भाषा में उर्दू और फारसी के शब्द बहुतायत मात्रा में मिलते है। सरल और सहज भाषा पदों को गति देती है। यमक, अनुप्रास, श्लेष अलंकारों का उनके काव्य मे विशिष्ट स्थान है। माधुर्य गुण उनके काव्य की विशेषता है।

साहित्य मे स्थान:-
तुलसीदास जी 'रामचरितमानस' महाकाव्य को सृजित कर लोगो में जनकल्याण की भावना जाग्रत की। व एक नए समाज की रूपरेखा तैयार की। हिन्दी साहित्य में उनके सृजित रचना से विशिष्ट स्थान प्राप्त है।

मध्यप्रदेश
SECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESH

प्रश्न क्र.

प्रश्नोत्तर क्र.-23

'आचार्य रामचन्द्र शुक्ल'

(अ) दो रचनाएँ :- 'रसमीमांसा', 'बुद्धचरित'

(ब) भाषा-शैली :-
आचार्य रामचन्द्र शुक्लजी की भाषा शुद्ध, परिमार्जित साहित्यिक खड़ी बोली है। उनके रचनाओं में व्यर्थ का शब्दाडम्बर नही मिलता। गूढ़ विषयों के प्रतिपादन में संस्कृतनिष्ठ शब्दों का प्रयोग किया है। सामान्य विषयों की विवेचना में सरल और सहज शब्दों का प्रयोग किया है। मुहावरों और कहावतों का प्रयोग भाषा में प्रवाह लाने में सहायक है।

शुक्लजी ने अपनी शैली का निर्माण किया है। अपनी रचनाओं में उन्होंने गवेषात्मक शैली, भावात्मक शैली तथा समीक्षात्मक शैली का प्रयोग किया है। उन्होंने पाश्चात्य तथा भारतीय निबंध शैलियों का प्रयोग भी किया है।

(स) साहित्य में स्थान :-
शुक्ल जी हिन्दी साहित्य में एक निबंधकार, इतिहासकार तथा आलोचक के रूप में प्रसिद्ध है। उनका लिखा 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' हिन्दी साहित्य के लेखन का प्रमुख आधार है। उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व की हिन्दी जगत में विशिष्ट छाप है।

BSE

BOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATI

प्रश्न क्र.

प्रश्नोत्तर क्र.-24

संकेत- " असल प्रकाश — — — — — रोका जास

संदर्भ:- प्रस्तुत गद्यांश 'तिमिर गेह में किरण आचरण' नामक शीर्षक से अवतरित है। ~~उसके~~ लेखक 'डॉ. श्यामसुंदर दुबे' है।

प्रसंग:- प्रस्तुत गद्यांश में लेखक ने यह स्पष्ट किया है कि सृजन का प्रकाश अंधेरे में भी प्रक होकर जीवन को सुखमय बना देता है।

B
S ~~भा~~
E व्याख्या:-

लेखक कहता है कि जीवन में विकास त संभव है जब हम अपने अंदर छिपे सृजन के प्रकाश क बाहर निकालते है। जब आदमी का सद्व्यवहार, उस ईमानदारी और विवेक किसी दूसरे आदमी को प्रेरि करती है तो सृजन का एक मार्ग खुल जाता है। सृ दीपक की उस ज्योति की तरह है जो कठिन-से-क न परिस्थितियों में भी मार्ग प्रशस्त कर देती है।

लेखक कहता है कि उस अंधेरे कमरे में उगे पी आभा प्रस्तुत करते गेहूं के पौधे यह संदेश दे रहे है कि सृजन अर्थात् विकास की यात्रा कभी रूकती नहीं है अ अग्रसर अपने पथ पर विचारों के माध्यम से आगे बढ़ती जाती है फिर चाहे वह अंधेरे बंद कमरों में ही क्यों न हो

MADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHB

प्रश्न क्र.

विशेष:-
(i) शुद्ध साहित्यिक खड़ी बोली।
(ii) मनुष्य का श्रम, ईमानदारी और विवेक सृजन करने में सहायक है।

प्रश्नोत्तर क्र.-25 (अथवा)

संकेत-" बड़े न हूजे — — — — — गढ़ो न जाय।

संदर्भ:-
प्रस्तुत पद्यांश 'नीतिकाव्य' के 'दोहे' नामक शीर्षक से लिया गया है। उसके कवि 'बिहारीजी' है।

प्रसंग:- प्रस्तुत पंक्तियों में कवि बिहारी ने बताया है कि बिना गुणों के कोई भी व्यक्ति सम्मान का पात्र नही होता है।

भावार्थ:- कवि बिहारी कहते है कि बड़े (उच्च) व्यक्ति बिना गुणों के सम्मान और प्रशंसा प्राप्त नही कर सकते। उनमें गुणों का होना ही उनकी प्रतिष्ठा का प्रतीक बनता है। जिस प्रकार धतूरे को कनक भी कहा जाता है किंतु उससे कनक (सोना) के समान गहना नही गढ़ा जा सकता है।

विशेष:-
(i) मनुष्य गुणों के बिना सम्मान प्राप्त नहीं कर सकता है।
(ii) ब्रजभाषा, अनुप्रास अलंकार, दोहा छंद का प्रयोग।

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ अंक = कुल अंक

BOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्नोत्तर क्र.-26

(अ) गद्यांश का शीर्षक - 'पर्व की महत्ता।'
(ब) जीवन प्रवाह को सही दिशा पर्व देते है।
(स) सारांश :-

भारतीय संस्कृति का एक आवश्यक तत्व पर्व है। पर्व जीवन को सुखमय बनाने और प्रेम एवं करूणा की भावना उद्दीप्त करने वाले है। उनके माध्यम से जीवन को एक सही दिशा मिलती है। अतः उन्हें उल्लासपूर्वक मनाना चाहिए।

BSE

प्रश्नोत्तर क्र.-28 (ब)

(iv) 'साहित्य और समाज'

" अंधकार है वहाँ, जहाँ आदित्य नहीं है,
मुर्दा है वह देश, जहाँ साहित्य नहीं है ॥"

(1) प्रस्तावना।
(2) समाज क्या है?
(3) साहित्य क्या है?
(4) समाज का साहित्य पर प्रभाव।
(5) साहित्य का समाज पर प्रभाव।
(6) समाज और साहित्य में संबंध।
(7) उपसंहार।

SECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPA

प्रश्न क्र.

प्रश्नोत्तर क्र.- 27 (अथवा)

~~प्रति,~~

सेवा में,
नगर निगम अध्यक्ष,
जिला- सीधी (म.प्र.)

विषय - मोहल्ले की नियमित सफाई न होने के कारण शिकायत-पत्र।

महोदय,

मैं आपको सूचित करना चाहता हूँ कि सीधी जिले की वर्मा कॉलोनी में मोहल्ले की नियमित सफाई नही हो रही है जिसकी वजह से अव्यवस्था और गंदगी दोनो ही बुरी तरह से फैल गई है। आपके कर्मचारी प्रतिदिन नही आते और काम में लापरवाही करते है।

अतः आपसे समग्र मोहल्लेवासियों की ओर से अनुरोध है कि शीघ्र ही कड़ा कानून बनाने की कृपा करे ताकि कोई गंभीर बीमारी से मानव-जीवन प्रभावित न हो सके।

धन्यवाद।

लाला।
[redacted]
01-03-2017

आवेदक
रो.नं.- 515

B
S
E

BOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्नोत्तर क्र.-28

'भारतीय समाज में नारी का स्थान'

"नारी तुम केवल श्रद्धा हो, विश्वास के नग पग तल-तल में
पीयूष स्त्रोत-सी बहा करो, जीवन के सुंदर समतल में।"

प्रस्तावना :—

नारी भगवान की एक अद्भुत कृति है जिसके बिना यह संसार आगे बढ़ नहीं सकता है। नारी ईश्वर की स्थापित की गई अमूल्य निधि है जो समाज को आकार और स्वरूप प्रदान करती है। नारी की महिमा साहित्य में कवियों और लेखकों द्वारा, वेदो में ऋषि-मुनियों तथा यहाँ तक कि दुष्ट जनो ने भी नारी के महत्व को स्वीकारा है।

भारतीय समाज जैसे-जैसे परिवर्तन हुआ, नारी के स्वरूप और उसकी सोच में परिवर्तन आते गए। कहीं ये परिवर्तन उनकी सम्मान में वृद्धि में सहायक हुए तो कही उनके पतन के कारण बन गए।

प्राचीन काल में नारी की स्थिति :—

वैदिक काल में नारी की स्थिति अत्यंत उच्च कोटि की थी, जैसा किसी भी काल मे नही देखा गया। वैदिक काल ऋषि-मुनियों का काल था, जहाँ नारी को सरस्वती, लक्ष्मी देवी के रूप मे पूजा जाता था। वे सभी धार्मिक और आध्यात्मिक कार्यों मे भाग लेती

SECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPAL

प्रश्न क्र.

भी तथा उन्हें शिक्षा प्राप्त करने का भी अधिकार प्राप्त था।

मध्यकाल में नारी की दशा :—

मध्यकाल में भारत में मुस्लिम राजाओं का आधिपत्य था। यद्यपि राजा और यवन दोनों ही भारत पर शासन कर रहे थे। राजाओं की विलासिता ने नारी को केवल प्रेम की पूर्ति का साधन बना दिया था। नारियों की छवि अत्यधिक धूमिल हो चुकी थी। अपहरण और गलत व्यवहार नारियों के लिए एक आम बात बन चुकी थी।

इस काल में कुछ नारियाँ चतुर और चालाक थी। शासन में उनकी पैठ थी। झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई इत्यादि वीरांगनाओं ने भारतीय संस्कृति की रक्षा की।

आधुनिक काल की नारी की स्थिति :—

आधुनिक काल की नारी पुरुषों के प्रभाव से मुक्त होकर स्वच्छन्द आकाश में उड़ना चाहती है तथा अपनी इच्छाओं को पूरा करना चाहती है।

इस काल में कई स्थितियाँ सामने परिलक्षित होती है। आज भी किसी क्षेत्र में नारी को दबाकर रखा जाता है तो कहीं नारियाँ अपनी मर्यादा से बाहर जा चुकी है। नारियों को अपने सम्मान और प्रतिष्ठा से अधिक धन का लालच है।

B S E

BOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRA

प्रश्न क्र.

नारी के कार्य क्षेत्र :—

नारी आज प्रत्येक क्षेत्र में काम करने में सक्षम है। इंजीनियरिंग, डॉक्टर, मैकेनिकल जोन तथा लोक सेवाओं में नारियाँ बाजी मार रही हैं। उनको हर क्षेत्र मे कार्य करने की छूट दी जा रही है तथा उन्नति के प्रयास किए जा रहे है।

नारी की समाज में आवश्यकता :—

नारी समाज में एक पुत्री, एक माँ तथा एक पत्नी के रूप में कई भूमिकाओं का निर्वहन करती है। नारी के बिना समाज की तुलना हम बिना पहिये की गाड़ी से कर सकते है जिसके बिना गाड़ी का कोई अस्तित्व नही है।

पुरुष प्रधान भारतीय समाज में नारी की आवश्यकता, अस्तित्व और महत्व उतना ही है जितना पुरुषों का है। स्त्री और पुरुष समाज में एक-दूसरे के पूरक है।

उपसंहार :—

"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, तत्र देवता रमन्ते।"

प्राचीनकाल से आधुनिक काल के समयचक्र में नारी की स्थिति में काफी उतार-चढ़ाव देखा गया है तथा अध्ययन से यह स्पष्ट है कि आज की नारी प्राचीनकाल की नारी से एक बेहतर भविष्य को आकार दे रही है। नारी के उत्कर्ष में सभी की सहमति जाग्रत हो रही है। अतः नारी को अपनी

SECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOA

प्रश्न क्र.

मर्यादा और सम्मान का ध्यान करते रखते हुए प्रग-
ति के मार्ग पर आगे बढ़ना चाहिए।

प्रश्नोत्तर क्र. -21

शुक्लोत्तर युग के निबंधो की चार विशेषताएँ निम्नलिखित है -

(i) भावात्मक और आत्मपरक निबंध।
(ii) विषय-वस्तु में पर्याप्त विविधता।
(iii) भावनात्मक शैली।
(iv) हास्य की परिनिष्ठिता।
(v) विचारात्मक और गंभीर शैली।

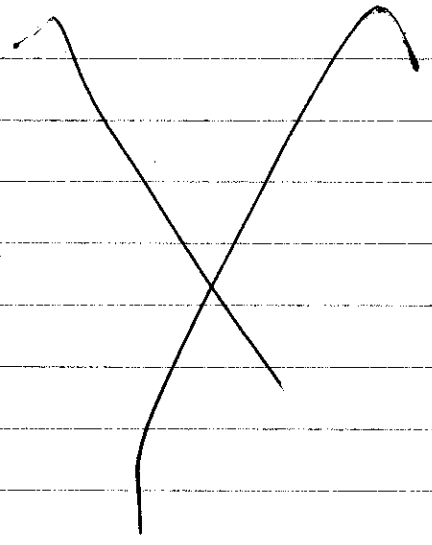

BSE